फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 41)

Rafiqe Safar Kaisa Ho (Hindi)

रफ़ीक़े सफ़र कैसा हो ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ के मदनी मुज़ाकरे नम्बर 34 के मवाद समेत अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''रफ़ीक़े सफ़र कैसा हो ?''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • E-mail : **hindibook@dawateislamihind.net**

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आशिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर मदनी मुज़ाकरात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** इन मदनी मुज़ाकरात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ालआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

16 ज़ी क़ा'दतुल ह़राम 1439 सि.हि. / 30 जूलाई 2018 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

रफ़ीके़ सफ़र कैसा हो ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (31 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जुमुआ़ के दिन मुझ पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूं कि जुमुआ़ का दिन फ़रिश्तों की ह़ाज़िरी का दिन है इस दिन फ़रिश्ते ह़ाज़िर होते हैं और जो कोई भी मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है उस का दुरूद मेरे सामने पेश किया जाता है यहां तक कि वोह दुरूद पढ़ने से फ़ारिग़ हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं मैं ने अ़र्ज़ की : क्या आप की (ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी ? इर्शाद फ़रमाया : وَبَعْدَ الْمَوْتِ اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ या'नी वफ़ात के बा'द भी, बेशक **अल्लाह** पाक ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के जिस्मों को खाए, **अल्लाह** पाक के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं ।[1]

مدینہ

1 ...... ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاته ... الخ، ۲/۲۹۱، حدیث: ۱۶۳۷ دار المعرفة بیروت

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बा'द इन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा इन का जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है
औरों की रूह़ हो कितनी ही लत़ीफ़ इन के अज्साम की कब सानी है
येह हैं ह़य्ये अबदी इन को रज़ा सिदक़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रफ़ीक़े सफ़र कैसा हो ?

सुवाल : जब चन्द इस्लामी भाई मिल कर सफ़र करें तो उन्हें क्या करना चाहिये ? नीज़ रफ़ीक़े सफ़र को कैसा होना चाहिये ?

जवाब : जब भी चन्द इस्लामी भाई मिल कर सफ़र करें तो उन्हें चाहिये कि वोह अपने में किसी एक को निगरान बना लें। हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वोह अपने में से एक को अमीर बना लें।[1] निगरान तमाम कामों को शुरका में तक़्सीम कर दे ताकि दौराने सफ़र सामान वग़ैरा उठाने और दीगर मुआ़मलात निमटाने में सहूलत रहे और किसी एक पर बोझ भी न पड़े। जैसा कि एक सफ़र में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बकरी ज़ब्ह़ करने का इरादा फ़रमाया तो मुख़्तलिफ़ काम आपस में तक़्सीम फ़रमा लिये, किसी ने अपने ज़िम्मे बकरी

1 ..... ابوداود، کتاب الجهاد، باب فی القوم یسافرون...الخ، ۳/۵۱، حدیث: ۲۶۰۹ دار احیاء التراث العربی بیروت

www.dawateislami.net

ज़ब्ह करने का काम लिया तो किसी ने उस की खाल उतारने की ज़िम्मादारी ली तो किसी ने पकाने की । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लकड़ियां जम्अ करना मेरे ज़िम्मे है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह काम भी हम ही कर लेंगे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं जानता हूं कि येह काम भी आप कर लेंगे, लेकिन मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं आप लोगों में नुमायां नज़र आऊं क्यूं कि **अल्लाह** पाक अपने बन्दे की इस बात को ना पसन्द फ़रमाता है कि वोह अपने दोस्तों में नुमायां नज़र आए ।[1]

शुरका निगरान की इताअ़त करें और निगरान शुरका की ख़िदमत

शुरका को चाहिये कि वोह निगरान की इताअ़त करें और निगरान भी ख़ूब ख़ूब शुरका की ख़िदमत करे इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सफ़र भी ख़ुश गवार होगा और किसी को तक्लीफ़ भी नहीं होगी । हमारे सहाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن दौराने सफ़र अपने रुफ़क़ा का ख़याल रखते, उन्हें ज़ियादा से ज़ियादा आसानियां फ़राहम करते यहां तक कि उन के सामान को ख़ुद उठा लेते, इस ज़िम्न में दो ह़िकायात मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 ..... اتحاف السادة المتقين، كتاب آداب المعيشة واخلاق النبوة، ٨/٢١٠ دار الكتب العلمية بيروت

www.dawateislami.net

तुम तो कश्ती हो !

हज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक सफ़र में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था, दौराने सफ़र जो भी आदमी थक जाता तो वोह अपना सामान मेरे कन्धों पर डाल देता यहां तक कि मैं ने बहुत ज़ियादा सामान उठा लिया। येह देख कर हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "اَنْتَ سَفِیْنَۃٌ" या'नी तुम तो कश्ती हो।" तो उस दिन से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी नाम से मशहूर हो गए।[1]

1...... أسد الغابة، سفينة، ٢/ ٣٨١ دار احياء التراث العربي بيروت। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का नाम रिबाह़ या मेहरान या रूमान है, जनाबे उम्मे सलमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के ग़ुलाम थे आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) ने इस शर्त़ पर उन्हें आज़ाद किया कि ता ह़ीने ह़यात (या'नी ज़िन्दगी भर) आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत करें। येह बोले कि अगर आप येह शर्त़ न भी लगाएं तब भी मैं हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमत करता। जिस्म मेरा आज़ाद हुवा मगर दिल मेरा उन का हमेशा ग़ुलाम रहेगा। एक सफ़र में कोई ग़ाज़ी थक गया तो उस का सारा बोझ आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उठा लिया, अपना बोझ और हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का सामान, उस ग़ाज़ी का सामान सब कुछ उठा कर चल दिये। सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "तुम तो आज सफ़ीना या'नी कश्ती हो गए।" तब से आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का लक़ब सफ़ीना हुवा, अस्ली नाम गुम हो कर रह गया, जैसे जनाबे अबू हुरैरा का नाम गुम हो गया। शेर से आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ही ने कहा था कि मैं रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का ग़ुलाम हूं और शेर कुत्ते की त़रह़ आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पीछे हो लिया था। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/77, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

www.dawateislami.net

काश मैं येह न कहता कि आप अमीर हैं !

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली रिबाती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الہَادِی की सोह़बत इख़्तियार की, वोह जंगल में जा रहे थे। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : मैं इस शर्त़ पर तुम्हें अपने साथ रखूंगा कि हम दोनों में से एक अमीर होगा और दूसरा मा तह़्त। मैं ने कहा : आप अमीर होंगे। उन्हों ने फ़रमाया : फिर तुम पर मेरी इत़ाअ़त लाज़िम होगी। मैं ने कहा : जी हां। चुनान्चे उन्हों ने एक थेला लिया और मेरा ज़ादे राह उस में डाल कर अपनी पीठ पर उठा लिया। जब मैं ने येह देखा तो कहा : आप थेला मुझे दे दीजिये। उन्हों ने फ़रमाया : क्या तुम ने मुझे अमीर नहीं बनाया ? तुम पर मेरी इत़ाअ़त लाज़िम है। एक रात बारिश ने हमें आ लिया तो आप सुब्ह़ तक मेरे सिरहाने खड़े हो कर चादर के ज़रीए़ मुझे बारिश से बचाते रहे ह़ालां कि मैं बैठा हुवा था और मैं अपने नफ़्स से कह रहा था : काश मैं मर जाता और आप से येह न कहता कि आप अमीर हैं।(1)

दौराने सफ़र दूसरों से सुवाल करना

सुवाल : दौराने सफ़र दूसरों से सुवाल करना कैसा ?

जवाब : दूसरों से सुवाल करना तो वैसे ही एक मा'यूब फ़े'ल है और

(1) ...... احیاء العلوم، کتاب آداب الألفة...الخ، الباب الثانی فی حقوق الأخوة والصحبة، ۲۲۸/۲ دار صادر بیروت

दौराने सफ़र तो इस की कराहियत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाएगा क्यूं कि सफ़र में हर शख़्स के पास उ़मूमन ब क़दरे ज़रूरत ही तोशा होता है अब अगर दूसरा भी उस से सुवाल करेगा तो वोह देने वाला खुद आज़्माइश में आ जाएगा लिहाज़ा दूसरों से सुवाल करने के बजाए अपनी ज़रूरत की चीज़ें मसलन पानी का गेलन, मिट्टी के बरतन और चटाई वग़ैरा साथ रखनी चाहिएं । कुरआने करीम में दौराने सफ़र अपना तोशा साथ रखने और दूसरों से सुवाल करने से बचने का हुक्म दिया गया है । चुनान्चे इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى (پ۲، البقرة:۱۹۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है ।

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : ''बा'ज़ यमनी ह़ज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा में पहुंच कर सुवाल शुरूअ़ कर देते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के मुरतकिब होते । उन के बारे में आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो, औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़ गारी है ।''

www.dawateislami.net

नमक के साथ जव की रोटी खाना तो मन्ज़ूर लेकिन.....!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن में ऐसी खुद्दारी हुवा करती थी कि नमक के साथ जव की रोटी खाना तो मन्ज़ूर कर लेते लेकिन किसी के सामने दस्ते सुवाल दराज़ न करते । अगर कोई बिन मांगे देता तब भी क़बूल न फ़रमाते । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन बज़्ज़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : एक मरतबा आ़शूरा की रात मैं एक मुसाफ़िर ख़ाने में दाख़िल हुवा तो वहां एक दरवेश जव की रोटी नमक के साथ खा रहा था । उस की येह ह़ालत देख कर मैं तड़प उठा । मेरे पास उस वक़्त एक हज़ार दीनार थे जो मैं ने इ़बादत गुज़ारों को नज़राना देने की ग़रज़ से जम्अ़ कर रखे थे । मैं ने लोगों से उस दरवेश के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो पता चला कि वोह इ़ल्मे तसव्वुफ़ का बहुत बड़ा आ़लिम और यहां के तमाम ज़ाहिदों पर फ़ौक़िय्यत रखता है । मैं ने सोचा कि येह तमाम दीनार इसे दे देने चाहिएं क्यूं कि इस से बेहतर कोई नहीं जिस पर माल ख़र्च किया जाए । चुनान्चे सुब्ह़ होते ही मैं चन्द रुफ़क़ा के साथ उस दरवेश के पास गया । वोह बड़ी ख़न्दा पेशानी से मिला, मैं भी खुशरूई से पेश आया । मैं ने कहा : कल मैं ने आप को नमक के साथ जव की रोटी खाते देखा । मेरा ख़याल है कि तुम दिन को रोज़ा रखते हो और इफ़्त़ारी में सिर्फ़ नमक के साथ जव की रोटी खाते हो । मैं चाहता हूं कि तुम्हें कुछ हदिय्या पेश करूं । येह कह कर मैं ने दीनारों की थेली

उस की त़रफ़ बढ़ाते हुए कहा : येह एक हज़ार दीनार हैं । येह सुन कर उस दरवेश ने मेरी त़रफ़ बड़ी ग़ज़ब नाक नज़रों से देखा और कहा : अपने दीनार वापस ले जाओ ! बेशक येह तो उस की जज़ा है जिस ने अपना राज़ लोगों पर ज़ाहिर कर दिया हो ।[1]

इज्तिमाअ़ के लिये सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र या सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ख़ातिर अपनी ज़ात के लिये किराए और दीगर अख़राजात वग़ैरा का सुवाल करना कैसा है ?

जवाब : मदनी क़ाफ़िले में सफ़र हो या सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत अपनी ज़ात के लिये किराए और दीगर अख़राजात वग़ैरा का सुवाल करना जाइज़ नहीं क्यूं कि येह काम मुस्तह़ब हैं ऐसी ज़रूरिय्यात में से नहीं हैं जिन के लिये सुवाल करना ह़लाल हो, यहां तक कि ह़ज व उ़म्रह और सफ़रे मदीना के लिये भी सुवाल करने की इजाज़त नहीं । ऐसों के ह़ालात से वाक़िफ़ हो कर उन्हें देना भी ना जाइज़ व गुनाह है । चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का ख़ुलासा है : जिन को सुवाल करना ह़लाल नहीं ऐसों के सुवाल पर उन का ह़ाल जान कर उन के सुवाल पर कुछ देना कोई कारे सवाब नहीं बल्कि ना जाइज़ व गुनाह और गुनाह में मदद करना है ।[2]

مدینہ

1 ..... عیون الحکایات، الحکایۃ التسعون بعد المائتین، ص ۲۶۴ دار الکتب العلمیۃ بیروت

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 10/303 मुलख़्ख़सन, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

कोई पेशकश करे तब भी शुक्रिय्या के साथ मन्अ़ कर दीजिये

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र या सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ख़ातिर सुवाल करना तो दूर की बात अगर कोई ख़ुद पेशकश करे तब भी आप शुक्रिय्या के साथ उसे मन्अ़ कर दीजिये और अपनी जेब से ख़र्च कर के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत कीजिये ताकि राहे ख़ुदा में सफ़र करने के सवाब के साथ साथ माल ख़र्च करने का भी सवाब मिले। राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने के बहुत फ़ज़ाइल हैं। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने **अल्लाह** पाक की राह में माल भेजा ह़ालां कि ख़ुद अपने घर में ही ठहरा रहा उस के लिये हर दिरहम के बदले सात सो दराहिम हैं और जिस ने बज़ाते ख़ुद **अल्लाह** पाक की राह में जिहाद किया और अपना माल उस जंग में ख़र्च किया तो उस के लिये हर दिरहम के बदले सात लाख दराहिम हैं, फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ﴾ (پ۳، البقرة:۲۶۱) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे।)[1] हां अगर राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की इस्तिता़अ़त न हो और बिग़ैर सुवाल किये कोई मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये

1 ..... ابن ماجه، كتاب الجهاد، باب فضل النفقة...الخ، ۳/ ۳۳۹، حديث: ۲۷۶۱

www.dawateislami.net

अख़्राजात मुहय्या करे तो क़बूल करने में ह़रज नहीं। **अल्लाह** पाक हमें अपनी राह में माल ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

त़ालिबे इ़ल्म का सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या त़ालिबे इ़ल्म ज़कात व सदक़ात के लिये सुवाल कर सकता है ?

जवाब : जिस त़ालिबे इ़ल्म ने ख़ुद को इ़ल्मे दीन पढ़ने के लिये मसरूफ़ कर लिया हो तो कमाने पर क़ुदरत के बा वुजूद भी उसे सुवाल करना ह़लाल है, अलबत्ता सुवाल करने के बजाए अगर वोह अपने हाथों से रिज़्क़ के अस्बाब पैदा करे और इस के सबब ता'लीम में ह़रज न होता हो तो येह उस के ह़क़ में ज़ियादा बेहतर और इ़ल्म की बरकतें ह़ासिल करने में ज़ियादा मुअस्सिर है। अफ़्सोस ! वालिदैन अपनी औलाद की दुन्यवी ता'लीम पर लाखों रुपै ख़र्च कर देते हैं मगर दीनी ता'लीम दिलवाते वक़्त इस्तित़ाअ़त होने के बा वुजूद ख़र्च करने का ज़ेह्न नहीं बनाते जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن अपनी औलाद को दीनी ता'लीम दिलवाते और उन के खाने पीने का भी ख़ुद एहतिमाम फ़रमाते थे। चुनान्चे हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي जब तह़सीले इ़ल्म के लिये रवाना होने लगे तो आप की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने 40 दीनार आप की क़मीस में सी दिये।[1]

مدینہ

1 ..... بهجة الاسرار، ذكر طريقه، ص ۱۶۷ دار الكتب العلمية بيروت

www.dawateislami.net

हाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ज्जाज बिन शाइ़र बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی जब तह़सीले इ़ल्मे दीन के लिये सफ़र पर रवाना हुए तो वालिदए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا ने 100 अ़दद कुल्चे (या'नी ख़मीरी रोटियां) एक मिट्टी के घड़े में भर कर साथ कर दिये। रोज़ाना एक कुल्चा दरियाए दिज्ला के पानी में भिगो कर तनावुल फ़रमा लेते और दिन रात ख़ूब जां फ़िशानी के साथ सबक़ पढ़ते रहते।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दौरे ता'लीम में उन के वालिद साह़िब गाउं से हर जुमुआ़ को उन के लिये खाना तय्यार कर के ले आते थे।[2] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن का सदक़ा हमें दीन की मह़ब्बत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हुसूले इ़ल्म की ख़ातिर क़ुरबानियां

सुवाल : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن के ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में पेश आने वाली तकालीफ़ के कुछ वाक़िआ़त बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : राहे इ़ल्म का सफ़र आसान नहीं मगर शौक़ की सुवारी पास हो तो दुश्वारियां मन्ज़िल तक पहुंचने में रुकावट नहीं बनतीं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن बड़े ज़ौक़ो शौक़ और लगन के साथ इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया करते और इस राह में आने वाली

مدینہ

1 ...... تذکرۃ الحفاظ، حجاج بن الشاعر...الخ، الجزء:۲، ۱/۱۰۰ دار الکتب العلمیۃ بیروت

2 ...... تعلیم المتعلم طریق التعلم، فصل فی الورع فی حال التعلم، ص ۱۱۲ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

तकालीफ़ और फ़क़्रो फ़ाक़ा को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करते थे और क्यूं न करते कि आ़लिमे मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : येह इ़ल्म ह़ासिल नहीं हो सकता जब तक इस की राह में फ़क़्रो फ़ाक़ा की लज़्ज़त न चखी जाए ।[1] इस ज़िम्न में बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के हुसूले इ़ल्म की कैफ़िय्यत मुलाह़ज़ा कीजिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी त़लबे इ़ल्म की कैफ़िय्यत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मैं हर वक़्त **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ रहता था ह़त्ता कि न ख़मीरी रोटी खाता, न धारीदार लिबास पहनता और न मर्द व औ़रत में से कोई मेरी ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर होता और मैं भूक की शिद्दत से पेट पर पथ्थर बांधे रहता था ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی ने त़लबे इ़ल्म में बसा अवक़ात सूखी हुई घास खा कर भी वक़्त गुज़ारा है । एक दिन में आ़म तौ़र पर सिर्फ़ दो या तीन बादाम खाया करते थे । एक मरतबा बीमार पड़ गए अति़ब्बा ने बतलाया कि सूखी रोटी खा खा कर इन की अंतड़ियां सूख चुकी हैं । उस वक़्त इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی ने बतलाया कि वोह

مدینہ

1 ..... جامع بیان العلم و فضله، باب الحض علی استدامة الطلب والصبر، ص ۱۳۶، رقم: ۴۴۲ دار الکتب العلمیة بیروت

2 ..... بخاری، کتاب فضائل أصحاب...الخ، باب مناقب جعفر...الخ، ۲/۵۳۶، حدیث: ۳۷۰۸ دار الکتب العلمیة بیروت

www.dawateislami.net

चालीस साल से ख़ुश्क रोटी खा रहे हैं और इस त़वील अ़र्से में सालन को बिल्कुल हाथ नहीं लगाया ।(1)

फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी की आपबीती यूं बयान फ़रमाते हैं : दिन भर काम करता रहा जिस से पच्चीस तीस रुपिया माहाना अपने वालिदैन की ख़िदमत करता और अपने खाने पीने का इन्तिज़ाम करता और बा'दे मग़रिब अपने दस साथियों के हमराह तक़रीबन बारह बजे तक ह़ज़रते अ़ल्लामा अर्शदुल क़ादिरी साह़िब क़िब्ला دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْقُدْسِیَہ से मद्रसा शम्सुल उ़लूम में ता'लीम ह़ासिल करता । इस त़रह़ नागपूर में मेरी ता'लीम का सिल्सिला आख़िर तक जारी रहा ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे अकाबिरीन व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن त़ालिबे इ़ल्मी के दौर में पेश आने वाली तकालीफ़ पर सब्र करते, भूक और मशक़्क़तें बरदाश्त करते मगर किसी पर बोझ बनना गवारा न करते, येही वज्ह थी कि उन्हें इ़ल्मे दीन की ख़ूब बरकतें नसीब होतीं और उन के ह़ाफ़िज़े भी बहुत क़वी होते । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की क़ुव्वते ह़िफ़्ज़ बयान करने के लिये

مدینہ

1..... तज़्किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 169, फ़रीद बुक स्टॉल, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2..... अ़जाइबुल फ़िक़्ह, स. 9, मक्तबए इस्लामिय्या, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

येह अम्र काफ़ी है कि जिस किताब को वोह एक नज़र देख लेते थे वोह उन्हें ह़िफ़्ज़ हो जाती थी। तह़सीले इ़ल्म के इब्तिदाई दौर में उन्हें सत्तर हज़ार अह़ादीस ह़िफ़्ज़ थीं और बा'द में जा कर येह अ़दद तीन लाख तक पहुंच गया।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाया करते : मुझे दो लाख अह़ादीसे त़य्यिबा ह़िफ़्ज़ हैं और अगर मैं इन से ज़ाइद (अह़ादीसे मुबारका) पाता तो ज़रूर उन्हें (भी) याद कर लेता।(2) अब तो ह़ालत येह है कि ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में तकालीफ़ बरदाश्त करना तो दर कनार मुफ़्त सहूलियात मिलने के बा वुजूद भी बा'ज़ त़ुलबा शिक्वा व शिकायत करते नज़र आते हैं। शायद येही वज्ह है कि अब इ़ल्म की वोह रूह़ानिय्यत नज़र नहीं आती और न ही ह़ाफ़िज़े मज़बूत़ हैं।

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात का मक़्सद

सुवाल : दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात का क्या मक़्सद है ?

जवाब : आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद है "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की

1...... तज़्किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 162

2...... جامع الاحاديث، ترجمة موجزة عن حياة الامام السيوطی، ۱/۱۰ دار الفكر بيروت

www.dawateislami.net

इस्लाह़ की कोशिश करनी है, "اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" । इस मदनी मक़्सद के हुसूल का एक बेहतरीन ज़रीआ़ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी हैं जिन में दुन्या भर के लाखों लाख आ़शिक़ाने रसूल शिर्कत करते हैं । इन सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और आ़शिक़ाने रसूल के क़ुर्ब की बरकत से कई बिगड़े हुए नौ जवान राहे रास्त पर आ गए, बे नमाज़ी, नमाज़ी बन गए, फ़ेशन के मस्ताने सुन्नतों के दीवाने बन गए, दुन्या के बे जा ग़मों में घुलने वाले फ़िक्रे आख़िरत की मदनी सोच के ह़ामिल बन गए, सैरो तफ़रीह़ की ख़ात़िर सफ़र के आ़दी मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले बन गए । यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त के ज़रीए़ दुन्या भर के कई लोगों की इस्लाह़ का ख़ूब सामान होता है और येही इन का मक़्सद भी है ।

पहला बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़

सुवाल : दा'वते इस्लामी का पहला बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ कहां हुवा था ?

जवाब : दा'वते इस्लामी का पहला बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ बाबुल मदीना में मुन्अ़क़िद हुवा । फिर दा'वते इस्लामी फ़ैज़ाने औलिया के सदक़े तरक़्क़ी के ज़ीने त़ै करती रही और आ़शिक़ाने रसूल की ता'दाद में दिन ब दिन इज़ाफ़ा होता रहा यहां तक कि बाबुल मदीना इज्तिमाअ़ के लिये नाकाफ़ी हो

गया तो बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये मदीनतुल औलिया में वाक़ेअ़ सह़राए मदीना के कसीर रक़्बे का इन्तिख़ाब किया गया ।

सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की तय्यारी

सुवाल : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की तय्यारी किस त़रह़ की जाए ?

जवाब : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की तय्यारी के लिये ज़ियादा से ज़ियादा चौकदर्स का एहतिमाम किया जाए, मसाजिद वग़ैरा में दर्सो बयान के आख़िर में इज्तिमाअ़ की भरपूर तरग़ीब दिलाई जाए और तय्यार होने वाले इस्लामी भाइयों के हाथों हाथ नाम भी लिखे जाएं । घर घर, दुकान दुकान जा कर इन्फ़िरादी कोशिश की जाए ह़त्ता कि जिस के न आने का यक़ीन हो उसे भी इज्तिमाअ़ की दा'वत से मह़रूम न रखा जाए क्यूं कि जब यके बा'द दीगरे कई इस्लामी भाई उसे दा'वत देंगे तो ज़रूर उस के दिल में इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की जुस्तजू पैदा होगी ।

यूं ही मक्तूब, फ़ोन, इन्टरनेट और दीगर ज़राइए़ इब्लाग़ के ज़रीए़ दूसरे शहरों और मुल्कों में रहने वाले शनासाओं तक दा'वत पहुंचाई जाए और फिर इज्तिमाअ़ में उन से मुलाक़ात भी की जाए ताकि उन्हें अज्नबिय्यत मह़सूस न हो । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा तश्हीरी सामान ज़ियादा से ज़ियादा ह़ासिल कर के हुकूकुल

www.dawateislami.net

इबाद की तलफ़ी से बचते हुए अहम मक़ामात पर आवेज़ां किया जाए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब इज्तिमाअ़ की दा'वत आ़म होगी ।

शख़्सिय्यात को इज्तिमाअ़ की दा'वत

सुवाल : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत के लिये शख़्सिय्यात पर इन्फ़िरादी कोशिश कैसे की जाए ?

जवाब : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की दा'वत देने के लिये शख़्सिय्यात के पास वफ़्द की सूरत में जाना ज़ियादा मुफ़ीद होता है क्यूं कि आ़म चलते फिरते या तन्हा जा कर दा'वत देने या फ़क़त दा'वत नामा भेज देने के मुक़ाबले में वफ़्द के साथ जाने से ज़ियादा असर पड़ेगा, नीज़ मुलाक़ात का वक़्त लेते हुए अपने आने के मक़्सद का इज़्हार न किया जाए तो मज़ीद अच्छे नताइज बरआमद हो सकते हैं ।

शख़्सिय्यात से मुराद

सुवाल : शख़्सिय्यात से मुराद कौन लोग हैं ?

जवाब : शख़्सिय्यात से मुराद उ़लमाए किराम, मुफ़्तियाने किराम, मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम और मसाजिद के अइम्मा हैं । यूं ही सरकारी अफ़्सरान व नाज़िमीन, वुज़रा व मुशीरान नीज़ सरमाया दार और अ़लाक़े व बरादरी में असरो रुसूख़ रखने वाले लोगों का शुमार भी शख़्सिय्यात में होता है । अल ग़रज़ जिसे मुआ़शरे में बड़ा आदमी समझा जाता है उस का शुमार श

www.dawateislami.net

शख़्सिय्यात को दा'वत देने के फ़वाइद

सुवाल : शख़्सिय्यात को नेकी की दा'वत देने या इज्तिमाअ़ में लाने के क्या क्या फ़वाइद हो सकते हैं ?

जवाब : शख़्सिय्यात को नेकी की दा'वत देने या इज्तिमाअ़ में लाने का एक फ़ाएदा तो येह है कि उन से वाबस्ता कसीर लोग भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत करते और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होते हैं, नीज़ दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी में शख़्सिय्यात की मुआ़वनत कारगर साबित होती है ।

दूसरा फ़ाएदा येह है कि शख़्सिय्यात को नेकी की दा'वत देने या इज्तिमाअ़ में लाने से उन की इस्लाह़ होती है और उन की इस्लाह़ दीगर कई लोगों की इस्लाह़ का सबब बनती है । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रफ़ाक़त में राहे ख़ुदा में सफ़र पर रवाना हुए तो क़बीलए बनी ज़फ़र के बाग़ में ''मरक़'' नामी कूंएं पर जा कर बैठ गए । इन दोनों के पास क़बीलए बनू अस्लम के लोग जम्अ़ हो गए, उन के चोटी के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर थे जो अभी दामने इस्लाम से वाबस्ता न हुए थे । ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ालाज़ाद भाई थे, सा'द बिन मुआ़ज़ ने उसैद बिन हुज़ैर को भेजा कि जाओ उन दोनों मुबल्लिग़ीन को डांट कर रोक दो जो कि हमारे

www.dawateislami.net

कमज़ोर लोगों को (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) बहकाने के लिये आए हैं। चुनान्चे उसैद बिन हुज़ैर ने अपना नेज़ा लिया और उन के पास पहुंच गए, आते ही उन को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया और धमकी दी कि अगर तुम्हें ज़िन्दगी प्यारी है तो यहां से चले जाओ। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (इन्फ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुए निहायत) नरमी और मिठास से फ़रमाया : "ज़रा बैठ कर बात तो सुन लीजिये, समझ में आए तो मान लीजिये और अगर पसन्द न आए तो हम आप को मजबूर नहीं करेंगे।" उसैद बिन हुज़ैर पर मीठे बोल का असर हुवा और अपना नेज़ा ज़मीन पर गाड़ कर उन के पास बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को इस्लाम के बारे में मदनी फूल दिये और क़ुरआने करीम पढ़ कर सुनाया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और वोह मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए। मुसल्मान हो जाने के बा'द कहा : मेरे पीछे सा'द बिन मुआ़ज़ है, अगर उस ने तुम दोनों की बात मान ली तो मेरी सारी क़ौम तुम्हारी बात मान लेगी, मैं उसे अभी तुम्हारे पास भेजता हूं। येह कह कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से सीधे सा'द बिन मुआ़ज़ के पास पहुंचे और उन को उन दोनों मुबल्लिग़ीन के पास जाने पर राज़ी कर लिया। सा'द बिन मुआ़ज़ ने आते ही दोनों साह़िबान को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (इन्फ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुए) उन्हें भी नरमी और मिठास के साथ नेकी की दा'वत सुनने के लिये आमादा कर लिया इस पर वोह अपना नेज़ा ज़मीन पर गाड़ कर उन के क़रीब बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन पर भी इस्लाम की ख़ूबियों से मालामाल मदनी फूल पेश किये और सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़ कर सुनाईं। आयाते क़ुरआनिया तासीर का तीर बन कर उन के दिल में पैवस्त हो गईं और वोह भी दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। इस्लाम आवरी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी क़ौम की त़रफ़ लौटे और उन से फ़रमाया : "तुम मेरे बारे में क्या राय रखते हो ?" सब ने बयक ज़बान हो कर कहा : आप हमारे सरदार हैं और आप की राय दुरुस्त और दूर रस होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "बस फिर मुझ पर तुम्हारे मर्दों और औ़रतों से उस वक़्त तक बात करनी ह़राम है जब तक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान नहीं ले आते।" रावी फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शाम नहीं होने पाई थी कि उस क़बीले के तमाम मर्द व औ़रत मुसल्मान हो चुके थे।(1)

सारा क़बीला ईमां लाया मीठे बोल की बरकत से

बनते काम बिगड़ जाते हैं सुन लो बे जा शिद्दत से

(1) ...... البدایۃ والنہایۃ، ۲/ ۵۲۷ تا ۵۲۹ مُلَخَّصًا دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

नए आने वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश

सुवाल : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में सफ़र करने वाले नए इस्लामी भाइयों की तरबियत कैसे की जाए ?

जवाब : सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये जब सफ़र का आग़ाज़ हो तो नए सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों को सुलझे हुए मुबल्लिग़ीन का रफ़ीक़ बना दिया जाए। अब मुबल्लिग़ीन हर वक़्त उन्हें अपने साथ रखें और क़दम ब क़दम मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ उन की तरबियत करते रहें मसलन जब नमाज़ का वक़्त आए तो उन का यूं ज़ेह्न बनाएं कि हम ने जल्दी से त़हारत वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़नी है ताकि मदनी इन्आ़म पर अ़मल किया जा सके और साथ ही बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत भी बयान कर दी जाए। जब खाने का वक़्त आए तो मिट्टी के बरतन में खाने वाले मदनी इन्आ़म की तरग़ीब दिलाएं।

दौराने सफ़र ह़स्बे ज़रूरत चटाइयां अपने साथ रख लें जब सोने का वक़्त आए तो चटाई पर सोने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल की तरग़ीब दिलाएं कि मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बिछोनों को सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नवाज़ा है और चटाई पर सोना भी साबित है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा मुबारक था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां आराम

www.dawateislami.net

फ़रमाते उसे नीचे दो तहों में बिछा दिया जाता । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात चटाई पर ही सो जाते और उस के नीचे कोई और चीज़ न होती (कि थोड़ी बहुत नर्म हो जाए) ।[1] सफ़र के दौरान अगर मुम्किन हो तो रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के चार सफ़्हात और कन्ज़ुल ईमान से तीन आयात मअ़ तरजमा व तफ़्सीर वाले मदनी इन्आ़म पर भी अ़मल कीजिये और उन्हें भी तरग़ीब दिलाइये ।

वक़्ते मुनासिब पर मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते हुए उन्हें भी फ़िक्रे मदीना का ज़ेहन दीजिये कि फ़िक्रे मदीना का मत़लब है अपना एह़तिसाब करना, ह़दीसे पाक में इस की तरग़ीब बयान की गई है । चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : समझदार वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बा'द वाली ज़िन्दगी के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और इस के साथ साथ **अल्लाह** तआ़ला से इन्आ़म की ख़्वाहिश करे ।[2]

मुबल्लिग़ीन तरबियत के इस मौक़अ़ को ग़नीमत जानें और नए आने वाले इस्लामी भाइयों को भरपूर शफ़्क़त दे कर मदनी इन्आ़मात के सांचे में ढालने की कोशिश फ़रमाएं । खाने पीने

---

1 ..... وسائل الوصول الى شمائل الرسول، الفصل الثانى فى صفة فراشه صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وما يناسبه، ص ۱۲۱ دار المنهاج بيروت

2 ..... ترمذى، كتاب صفة القيامة، باب (ت: ۹۰) ۴/ ۲۰۷، حديث: ۲۴۶۷ دار الفكر بيروت

www.dawateislami.net

और दीगर मुआ़मलात में ईसार का भरपूर मुज़ाहरा करें बिल ख़ुसूस वापसी पर उन्हें आप की महब्बत और तवज्जोह की ज़ियादा ह़ाजत है कहीं ऐसा न हो कि थकावट के बाइ़स आप उन पर तवज्जोह न दे सकें और शैत़ान उन्हें त़रह़ त़रह़ के वसाविस में मुब्तला कर के बदज़न कर दे कि इज्तिमाअ़ में लाने के लिये तो बड़े मीठे बनते थे लेकिन अब पूछते भी नहीं। याद रखिये ! इज्तिमाअ़ की काम्याबी का मे'यार बहुत ज़ियादा लोगों को जम्अ़ कर लेना नहीं बल्कि काम्याबी का मे'यार येह है कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल हो और ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नमाज़ी और सुन्नतों के आ़दी बनें।

इज्तिमाअ़ से पहले मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र

सुवाल : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त से पहले मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की अहम्मिय्यत बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : मदनी क़ाफ़िले जब भी सफ़र करें इन का फ़ाएदा ही फ़ाएदा है, अलबत्ता सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से पहले सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों के फ़वाइद इस लिये बढ़ जाते हैं कि मदनी क़ाफ़िले क़र्या क़र्या, शह्र शह्र और मुल्क मुल्क सफ़र कर के जहां नेकी की दा'वत की धूमें मचाते हैं वहीं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत भी ख़ूब आ़म करते हैं। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान लोगों पर ज़ियादा से ज़ियादा इन्फ़िरादी

www.dawateislami.net

कोशिश करने और उन्हें इज्तिमाअ़ में लाने का मौक़अ़ मिलता है लिहाज़ा तमाम ज़िम्मादारान इज्तिमाअ़ से क़ब्ल पाए जाने वाले जोशो जज़्बे से भरपूर फ़ाएदा उठाते हुए ख़ुद भी मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें और दूसरों को भी मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाएं। आप के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाने के सबब कोई एक शख़्स भी इज्तिमाअ़ में आ गया, उस का दिल चोट खा गया और वोह क़ुरआनो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गया तो आप के भी वारे न्यारे हो जाएंगे कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।[1]

इज्तिमाअ़ में जामिआ़ के असातिज़ा व त़ुलबा का किरदार

सुवाल : जामिअ़तुल मदीना के असातिज़ा व तुलबा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अपना क्या किरदार अदा कर सकते हैं ?

जवाब : जामिअ़तुल मदीना के असातिज़ा व तुलबा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में बहुत अहम किरदार अदा कर सकते हैं। इन्हें चाहिये कि येह इज्तिमाअ़ में पहले ही से पहुंच जाएं और एक जगह जम्अ़ हो कर बैठ जाने के बजाए इज्तिमाअ़ गाह में फैल जाएं और

مدینہ

1 ......مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی بن أبی طالب، ص ۱۰۰۷، حدیث: ۲۲۲۳ دار الکتاب العربی بیروت

www.dawateislami.net

नमाज़ों की सफ़ बन्दी व दीगर मुआ़मलात में शुरकाए इज्तिमाअ़ की मदद करें। लोगों को रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये अहले इ़ल्म की ज़रूरत होती है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी ने इस ज़रूरत के पेशे नज़र जामिअ़तुल मदीना की बुन्याद डाली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुल्क व बैरूने मुल्क में बे शुमार जामिआ़तुल मदीना लिल बनीन और जामिआ़तुल मदीना लिल बनात क़ाइम हैं, 2000 सि.ई. से 2018 सि.ई. तक की कारकर्दगी के मुत़ाबिक़ जामिआ़तुल मदीना लिल बनीन से फ़ारिग़ुत्तह़सील हो कर ''मदनी'' बनने वाले तुलबा की ता'दाद 3864 है, जब कि जामिआ़तुल मदीना लिल बनात से फ़ारिग़ुत्तह़सील हो कर ''मदनिय्या'' बनने वाली त़ालिबात की ता'दाद 5675 है।[1] **असातिज़ा** व तुलबा को चाहिये कि वोह अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ नए इस्लामी भाइयों को अपना और अपने जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना वग़ैरा का तआ़रुफ़ भी करवाएं। इस त़रह़ लोग और ज़ियादा इन से मुतअस्सिर हो कर इन के क़रीब होंगे और शरई रहनुमाई ह़ासिल कर सकेंगे। (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़

1..... दा'वते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना से दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) मुकम्मल करने वाले इस्लामी भाइयों को ''मदनी'' और इस्लामी बहनों को ''मदनिय्या'' कहा जाता है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

लोगों से राबिते का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा जामिआ़त के असातिज़ए किराम व तुलबाए किराम शुरकाए इज्तिमाअ़ बिल ख़ुसूस दूसरे शहरों से तशरीफ़ लाए हुए उ़लमाए किराम व मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام से मुलाक़ातें करें । याद रखिये ! अ़वाम की सफ़ों में दाख़िल हुए बिग़ैर मदनी कामों में काम्याबी ह़ासिल नहीं की जा सकती । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं शुरूअ़ से ही ज़ाती दोस्तियां करने के बजाए अ़वाम में घुल मिल जाता और उन्हें नेकी की दा'वत पेश करता ।

एक बार मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ह़ाजियों के दरमियान इज्तिमाअ़ की तरकीब थी लेकिन शनासाई न होने के सबब लोग क़रीब नहीं आ रहे थे लिहाज़ा मैं ने ख़ुद आगे बढ़ कर पहले सलाम व दुआ़ के ज़रीए गुफ़्तगू का आग़ाज़ किया और फिर ह़ाजियों में घुल मिल जाने के बा'द ख़ूब नेकी की दा'वत आ़म की । नेकी की दा'वत देने के लिये घरों से निकलना और अपनी शर्मो झिजक को दूर करना होगा, बिग़ैर क़ुरबानी दिये कुछ भी नहीं हो सकता । हमारे इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने घर बैठे इस्लाम को नहीं सींचा बल्कि इस्लाम की आबयारी के लिये पूरे ख़ानदान को ले कर मैदाने करबला में पहुंच गए ।

निकल कर ख़ानक़ाहों से अदा कर रस्मे शब्बीरी
कि फ़क़्रे ख़ानक़ाही है फ़क़त अन्दोहो दिलगीरी

www.dawateislami.net

इज्तिमाअ़ के बा'द सुस्ती का शिकार होना

सुवाल : इज्तिमाअ़ के बा'द सुस्ती का शिकार होने वाले इस्लामी भाइयों के लिये मदनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ लोगों को मदनी माहौ़ल से वाबस्ता करने और मदनी काम बढ़ाने का एक अहम ज़रीआ़ है क्यूं कि इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने वाले नए इस्लामी भाइयों के जज़्बात अपने उ़रूज पर होते हैं लिहाज़ा ज़िम्मादारान को चाहिये कि वोह इस मौक़अ़ पर सुस्त पड़ जाने के बजाए मज़ीद फ़अ़ूआ़ल हो जाएं और नए इस्लामी भाइयों को उन की सलाहि़य्यतों के मुताबिक़ मदनी कामों की ज़िम्मादारियां सोंप कर उन के ज़रीए़ अ़लाक़े में ख़ूब ख़ूब मदनी कामों की धूमें मचाएं ।

इज्तिमाअ़ के बा'द सुस्ती का शिकार हो कर नए इस्लामी भाइयों पर तवज्जोह न देने और उन्हें यूंही आज़ाद छोड़ देने की मिसाल ऐसी है जैसे कोई लोहार ख़ूब मेहनतो मशक़्क़त से लोहा गर्म करे और जब उसे सांचे में ढालने का वक़्त आए तो उसे यूं ही छोड़ दे, यूं मेहनत भी की और मक़्सद भी हाथ न आया लिहाज़ा इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाइयों पर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखते हुए उन्हें मदनी माहौ़ल के सांचे में ढालने की कोशिश कीजिये ।

ज़िम्मादारान इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह इज्तिमाअ़ के बा'द नए शुरका के साथ हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाएं ताकि इज्तिमाअ़ में जो सीखा है उस पर

www.dawateislami.net

अ़मल करने और दूसरों तक पहुंचाने और नए शुरका पर मज़ीद इन्फ़िरादी कोशिश करने का मौक़अ़ मिल सके। इज्तिमाअ़ से हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि इज्तिमाअ़ की दा'वत के साथ साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का भी ज़ेहन दिया जाए और इस के अख़राजात भी वुसूल कर लिये जाएं इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना आसान हो जाएगा।

तुम मदनी क़ाफ़िलों में ऐ इस्लामी भाइयो !
करते रहो हमेशा सफ़र ख़ुशदिली के साथ
इस्लामी भाई ''दा'वते इस्लामी'' का सदा
तुम मदनी काम करते रहो तनदेही के साथ

(वसाइले बख़्शिश)

घर में बन्यान पहन कर घूमना फिरना कैसा ?

सुवाल : घर में बन्यान पहन कर घूमना फिरना कैसा है ?

जवाब : घर हो या बाहर हर जगह उठते बैठते और सोते जागते पर्दे में पर्दा करने का एहतिमाम होना चाहिये, येह मदनी इन्आ़मात में से एक मदनी इन्आ़म भी है। सोते वक़्त पर्दे में पर्दा करने के लिये एक बड़ी चादर ऊपर ओढ़ लें। अगर ऊपर ओढ़ी हुई चादर सोते में उतर जाती हो या जो उलट पलट होते रहते हों उन की ख़िदमत में मदनी मश्वरा है कि पाजामे के ऊपर तहबन्द बांध लें या कोई चादर लपेट लें और ऊपर से भी एक चादर ओढ़ लिया करें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पर्दे में पर्दा हो जाएगा।

www.dawateislami.net

बा'ज़ लोगों की घर में बन्यान पहन कर बे तकल्लुफ़ चलने फिरने और सोने की आ़दत होती है शलवार के ऊपर इस त़रह़ की छोटी बन्यान होने की सूरत में चलने फिरने और बिल ख़ुसूस सोने में अक्सर सख़्त गन्दा मन्ज़र होता है ऐसे ह़यासोज़ मौक़अ़ पर मौजूद बा ह़या लोग आज़्माइश में पड़ जाते हैं लिहाज़ा बन्यान पर कुरता भी पहने रहें या फिर बन्यान के दोनों पहलूओं में ह़स्बे ज़रूरत क़मीस की त़रह़ चाक बना कर आगे और पीछे मुनासिब मिक़्दार में कपड़े का एक एक टुकड़ा सिलाई करवा लें इस त़रह़ बन्यान क़मीस की त़रह़ हो जाएगी और अब बन्यान पहन कर चलने फिरन में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ''पर्दे में पर्दा'' रहेगा लेकिन सोते वक़्त पाजामे के ऊपर तहबन्द बांध लें या कोई चादर ज़रूर लपेट लें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! घर हो या बाहर हर वक़्त उठते बैठते और सोते जागते मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुए पर्दे में पर्दा करने का ज़ेह्न बनाना चाहिये, यहां तक कि तन्हाई में भी ख़ूब पर्दे का ख़याल रखिये कि सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा ह़क़ है कि उस से ह़या की जाए।[1]

हमेशा करूं काश पर्दे में पर्दा
तू पैकर ह़या का बना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

مدینہ

1 ..... ابو داود، کتاب الحمام، باب ما جاء فی التعری، ۴/ ۵۸، حدیث: ۴۰۱۷

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त का मक़्सद	15
रफ़ीक़े सफ़र कैसा हो ?	3	पहला बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़	16
शुरका निगरान की इत़ाअ़त करें और निगरान शुरका की ख़िदमत	4	सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की तय्यारी	17
तुम तो कश्ती हो !	5	शख़्सय्यात को इज्तिमाअ़ की दा'वत	18
काश मैं येह न कहता कि आप अमीर हैं !	6	शख़्सय्यात से मुराद	18
दौराने सफ़र दूसरों से सुवाल करना	6	शख़्सय्यात को दा'वत देने के फ़वाइद	19
नमक के साथ जव की रोटी खाना तो मन्ज़ूर लेकिन.....!	8	नए आने वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश	22
इज्तिमाअ़ के लिये सुवाल करना कैसा ?	9	इज्तिमाअ़ से पहले मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र	24
कोई पेशकश करे तब भी शुक्रिय्या के साथ मन्अ़ कर दीजिये	10	इज्तिमाअ़ में जामिआ़ के असातिज़ा व तुलबा का किरदार	25
त़ालिबे इ़ल्म का सुवाल करना कैसा ?	11	इज्तिमाअ़ के बा'द सुस्ती का शिकार होना	28
हुसूले इ़ल्म की ख़ातिर क़ुरबानियां	12	घर में बन्यान पहन कर घूमना फिरना कैसा ?	29

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل **"** अपनी इस्लाह़ के लिये **"मदनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net